डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांकः 1 नवम्बर 2009 मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - सातवां | अंक-सातवाँ | नवम्बर -2009 | मासिक पत्रिका

5 **माया**
भजन पर बिठाने से पहले हिदायतें
(16 पी.एस.आश्रम राजस्थान)

7 **संदेश**
परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा एक संदेश
(अहमदाबाद)

17 **मन**
स्वामी जी महाराज की बानी
सतसंग परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(बैंगलोर)

29 **प्रेम-विरह**
परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखारविन्द से
(16 पी.एस.आश्रम राजस्थान)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया । फोन - 9950 55 66 71
विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन-9928 92 53 04 **उप सम्पादिका** : नंदिनी
सहयोग : रेणु सचदेवा, सुमन आनन्द व परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

(92)

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in Website : www.ajaibbani.org

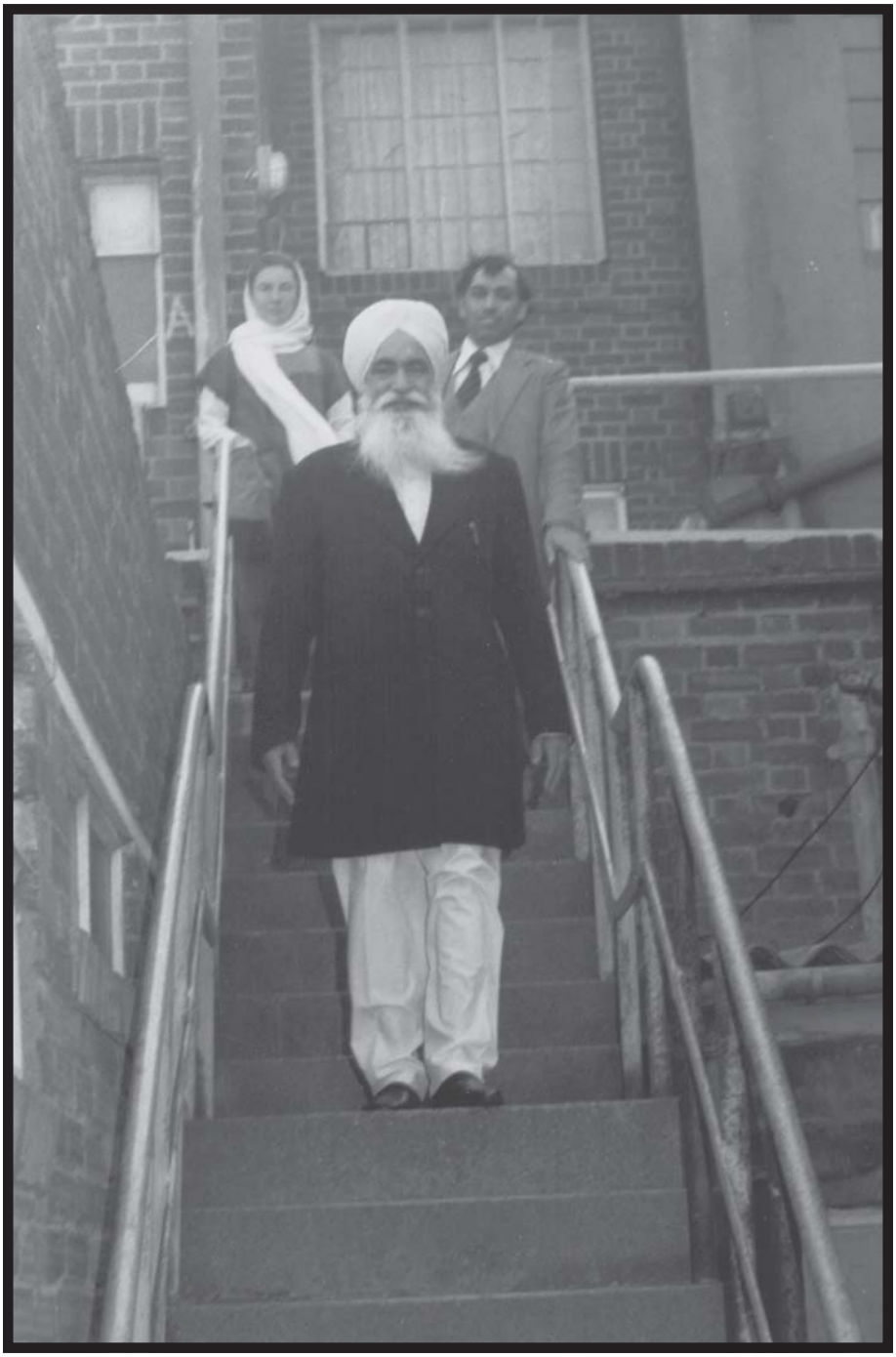

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा भजन पर बिठाने से पहले एक संदेश

माया

16 पी. एस. आश्रम (राज.)

जो माँगे ठाकुर अपने से सोई-सोई देवे। (2)

चतुर दिसा कीनों बल अपना, सिर ऊपर कर धारयो, (2)
कृपा कटाख अवलोकन कीनों, दास का दूःख बिदारयो, (2)
जो माँगे ठाकुर.....

हर जन राखे गुरु गोविंद, राखे गुरु गोविंद, (2)
कंठ लाए अवगुण सब मेटे, दयाल पुरख बखशिंद, (2)
जो माँगे ठाकुर.....

जो माँगे ठाकुर अपने ते, सोई सोई देवे, (2)
नानक दास मुख ते जो बोले, ईहाँ ऊहाँ सच होवे, (2)
जो माँगे ठाकुर.....

परम पिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमारी गरीब आत्मा पर रहम किया अपनी भक्ति का दान दिया और भक्ति करने का मौका भी दिया। अभी आप लोग प्यार भरा शब्द बोल रहे थे। परमात्मा के घर में सब कुछ है लेकिन हम दुनियादार दुनिया की चीज़ें ही माँगते हैं चाहे परमात्मा हमें कितनी भी चीज़ें दे दे! उन चीजों में संतोष नहीं शान्ति नहीं तृप्ति नहीं।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''**माया** के भक्त माया माँगते हैं। उन्हें **माया** मिल जाती है लेकिन माया में शान्ति नहीं बल्कि पहले वाली शान्ति भी भंग हो जाती है।'' सहजोबाई कहती हैं :

धनवन्ते अति दुखी निर्धन दुख का रूप।
साध सुखी सहजो कहे जिन पाया भेद अनूप।

कबीर साहब कहते हैं, ''**माया** नागिन है अपने पैदा किए हुओ को भी खा जाती है। माया सबसे पहले अपने भक्तों को चबा जाती है। माया के भक्तों को दिन-रात चिन्ता लगी रहती है।''

माया होई नागिनी जगत रहे लिपटाए।
इसकी सेवा जो करे तिसही को फिर खाए।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''बेशक प्रेमी के आगे सात समुद्रों का सोना-चाँदी रख दें! अगर वह गुरु से कुछ माँगेगा तो 'नाम' ही माँगेगा। हे परमात्मा! तू मुझे अपने 'नाम' का रस दे ताकि मैं तृप्त हो जाऊँ।''

महाराज जी हँसते हुए यह बात बताया करते थे कि एक बार **माया** स्त्री का रूप धारण करके भगवान के चरणों में गई। उसके माथे के बाल घिसे हुए थे और पीछे से गर्दन के बाल भी खिंचे हुए थे। भगवान ने पूछा, ''माया! तेरी ऐसी हालत क्यों है?'' **माया** ने कहा, ''मैं क्या बताऊँ। दुनियादार मुझे चाहते हैं, दिन-रात मुझे धूप देते हैं। मैं उनके हाथ नहीं आती भागती हूँ तो उनके हाथ में मेरे बाल आ जाते हैं जो खिंच जाते हैं। मैं साधुओं के दरबार में जाकर माथा रगड़ती हूँ कि मुझे अंगीकार करें किसी अच्छी जगह लगाएं।''

साधू के ठाड़ी दरबार, शरण तेरी मोको निस्तार।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''मैं जो बोलता हूँ वह यहाँ भी सच है और आगे दरगाह में भी सच होगा। जो 'नाम' माँगता है, गुरु को माँगता है गुरु उसके अंदर अपनी सारी बरकतें लेकर बैठ जाता है और उसके सारे कारज अपने आप ही करता है।''

हर जन राखे गुरु गोविंद।

महाराज कृपाल कहा करते थे कि सतसंग में बैठने से पहले हमें जो शब्द अच्छा लगता है वह शब्द बोलें। उसके बाद परमात्मा के पाँच पवित्र नामों को याद करें फिर दोनों आँखों के बीच तीसरे तिल पर ध्यान लगाकर अभ्यास करें। अभ्यास चाहे यहाँ करें, चाहे घर में करें अभ्यास को कभी बोझ न समझें, प्रेम प्यार से करें।

♣♣♣

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को एक संदेश

संदेश

अहमदाबाद

मैं अपने गुरुदेव सावन रूप कृपाल के चरणों में नमस्कार हूँ। अमेरिका की कहावत है किसी पेड़ का फल खाने से ही उस पेड़ के गुणों का पता लगता है। महात्मा की बानी या लेखनी पढ़ने से हमें पता लगता है कि महात्मा के अंदर कितना गुरु प्यार था। यह परमपिता कृपाल का शब्द है:

चलो नी सइयो सिरसे नू चलिए, तांघा सोहणे यार दियां, (2)
चलो नी सइयो,

1. आप सदा मालिक संग रहिंदे, रात दिने असी दुःखड़े सहिंदे, (2)
बेहरे गमां विच हरदम बेहंदे, आर दियां ना पार दियां,
चलो नी सइयो.....

2. भागे भरियां रूहां तेरियां, नाल तेरे जो हरदम रहियां, (2)
तैं बिन प्रीतमा जीवंदेया मोईयां, जान तेरे तो वार दियां,
चलो नी सइयो.....

3. पाके गल्लां गल्लां विच दुःखड़ा, जग सारा पया दिस्से रूखड़ा, (2)
छेती आन विखावी मुखड़ा, दुःखड़ी तेरे दीदार दियां,
चलो नी सइयो.....

4. तूं मालिक मैं बांदी तेरी, दर्शन पिया देई इक वेरी, (2)
जल्दी करीं ना लावीं देरी, भुखड़ी तेरे दीदार दियां,
चलो नी सइयो.....

5. कित्थे गयो हैं सावन प्यारे, बांदी रो रो उम्र गुजारे, (2)
गिननी आं रात बैठ मैं तारे, दिन तक तक राह गुजार दियां,
चलो नी सइयो.....

6. सौ सौ वारी मैंनू ख्वाबा आइयां, भुल गयों मैंनू मेरे साईयां, (2)
पहले नाल मेरे क्यों लाइयां, गल्ला ऐह आजार दियां,
चलो नी सइयो.....

7. प्यारे सावन तेरे बिन मोइयां, दर्शन बिन मैं पागल होइयां, (2)
पड़दियों बाहर आ सावन रोईयां, गल्लां कर हुण प्यार दियां,
चलो नी सइयो.....

8. मैथो चंगियां जुतियां तेरियां, मैं तती दूर पावां फेरियां, (2)
हाय छेती आवीं गमां ने घेरियां,भुखड़ी सावन दीदार दियां,
चलो नी सइयो.....

आप अपने खास प्रेमी के जरिए अपने गुरुदेव को संदेश भेजा करते थे। इस शब्द में कितनी तड़प है। एक जगह यह भी लिखा है कि हे सतगुरु! मुझसे अच्छी तो तेरी जूतियां हैं। जिनके अंदर इतना प्यार और तड़प है परमात्मा उनके लिए अपना दरवाजा जरूर खोलता है।

प्यारेयो! मैंने यहाँ अहमदाबाद में आपकी सेवा में कई दिन गुजारे हैं। मैं आप सबकी भावना की बहुत कद्र करता हूँ। यह सब कुछ परमात्मा कृपाल की ही दया है कि आप हमें सन्तमत में लाए, 'नाम' के रास्ते पर लाए।

मैं अक्सर यह कहानी सुनाया करता हूँ जिसे हर सतसंगी के लिए अपनाना जरूरी है। एक बादशाह था। उसकी एक ही लड़की थी और कोई लड़का बाला नहीं था। जब लड़की जवान हुई तो बादशाह के दिल में ख्याल आया कि इस लड़की की शादी करनी है कोई अच्छा सा लड़का मिल जाए! हम सभी अपनी लड़की के लिए ऐसा ही सोचते हैं कि कोई अच्छा लड़का मिल जाए। उस बादशाह ने शहर में मुनियादी करवा दी कि मैं अपनी लड़की की शादी उस लड़के के साथ करूंगा जो दिन छिपने से पहले मुझे ढूंढ लेगा।

बादशाह की इस छोटी सी शर्त को सुनकर कई जवान मैदान में निकल आए कि यह कौन सा मुश्किल काम है लेकिन वे बादशाह के राज़ को नहीं समझे। बादशाह एक गरीब माली का भेष बदलकर बाग में जाकर काम करने लगा।

बादशाह ने रास्ते में किसी जगह अच्छे-अच्छे खाने लगवा दिए। किसी जगह गाने मुजरे लगवा दिए। किसी जगह शराबों-कबाबों के दौर चलवा दिए। किसी जगह हर किस्म का अच्छे से अच्छा सामान रख दिया। कुछ जवानो को जीभ के चस्के ने फँसा लिया उन्होंने सोचा कि अभी बहुत दिन बाकी है बादशाह को बाद में ढूंढ लेंगे। पहले अच्छे-अच्छे खाने खा लें। बाबा बिशनदास जी कहा करते थेः

जो पट्टी सो स्वादो पट्टी।

जीभ को कन्ट्रोल में करना कोई मामूली बात नहीं। यह जीभ बत्तीस दाँतों के बीच में रहती है इनके बस में नहीं आती तो हम इसे किस तरह काबू कर लेंगे? मालिक ही कृपा करे तभी हम इन चटपटे स्वादों से बच सकते हैं। महात्मा बताते हैंः

निक्की जेही जीभ बड़ी चतुर कहोंदी है।
बत्ती दन्द ऐस दे दुश्मन ते बचके किवें दिखौंदी है।

इससे आगे राग-रंग हो रहे थे कुछ जवान उसमें अपना दिल लगाकर वहाँ बैठ गए। आगे औरतें मुफ्त में मिल रही थी कुछ जवान उनके साथ मनोरंजन करने बैठ गए।

एक मजबूत इरादे का जवान था उसने यह सोचा कि ये सब कुछ तो मैं बाद में भी कर सकता हूँ पहले जाकर बादशाह को ढूढूं! उसने किसी भी खाने, मुजरे और राग-रंग की तरफ ध्यान नहीं दिया। उसने हर जगह बादशाह को ही ढूंढा। जब दिन छिपने वाला था वह जवान उस बाग में पहुँच गया जहाँ बादशाह माली के रूप में काम कर रहा था।

बेशक बादशाह के कपड़े कैसे भी थे लेकिन उसने देखा कि इसका माथा खास किस्म का है और बोलचाल भी खास किस्म की है। जवान ने बादशाह को पहचान लिया और अर्ज की, ''बादशाह सलामत! अब आप प्रकट हो जाएं। हम जानते हैं कि जिनका दिल इतना मजबूत

होता है उनका नजरिया भी खास किस्म का होता है। बादशाह ने अपनी लड़की की शादी उस जवान के साथ कर दी और अपने सिर का ताज भी उसे दे दिया।

सच्चाई यह है कि भक्ति परमात्मा की लड़की है। हमारे गुरुदेव कहते हैं कि मैं तुम्हें अपना ताज और भक्ति रूप लड़की भी दूंगा लेकिन तुम मुझे ढूंढ लो। ऐसे बहुत थोड़े ही लोग हैं जो शुरू में ही महात्मा से आँखें चार होते ही समझ लेते हैं कि यह कुछ है। बहुत से ऐसे हैं जिन्हें कभी विश्वास आ गया कभी नहीं आया। जैसा कि हम मिलते समय कहते हैं कि भजन में बैठा नहीं जाता, ऐसे लोग गुरु को कैसे ढूंढ लेंगे?

गुरु आपके अंदर छिपकर बैठा है। गुरु कहता है, ''आओ मुझे ढूंढो।'' मजबूत इरादे के सतसंगी किसी भी चीज जैसे खाने, मुजरे और राग-रंग की परवाह नहीं करते। वे जब तक 'शब्द-रूप' गुरु को ढूंढ नहीं लेते अपने तन की भी परवाह नहीं करते।

मैं इस बात को पंजाबी लहजे में बताया करता हूँ जैसे छोटे बच्चे इस तरह की खेल खेलते हैं। बच्चे छिप जाते हैं जिसके जिम्में बारी होती वह बच्चा छिपते समय ताली बजाता है। समझदार बच्चे उस ताली की आवाज को सुनकर छिपे हुए बच्चे को पकड़ लेते हैं। जिन्हें यह समझ नहीं कि आवाज किस तरफ से आई वे बेचारे कभी इधर तो कभी उधर ढूंढते हैं। हमारी भी यही हालत है हम कहते हैं कि हमारे गोडे, घुटने दुखते हैं; मन नहीं लगता। मजबूत इरादे के सतसंगी सतगुरु की बताई हुई आवाज की तरफ चले जाते हैं।

मैं अहमदाबाद आकर काफी खुश हुआ। परमात्मा कृपाल ने हमें जो समय दिया है हम उसके धन्यवादी हैं। आपने सन्तबानी मैगजीन पढ़ी होगी फिर भी मैं आपको बता देता हूँ कि मुझे आम दुनिया का ज्ञान नहीं था क्योंकि मैंने जिंदगी का ज्यादा हिस्सा जमीन

के अंदर बैठकर बिताया है। मैं दिल्ली के लोगों को और जिस इलाके में रहता था वहाँ के लोगों को भी नहीं जानता था। अमेरिका या और मुल्कों के लोगों को जानने का तो कोई मतलब ही नहीं था।

जब उस दयालु परमात्मा कृपाल को दया आई तो उन्होंने खुद ही अपना प्यारा बन्दा भेजा जिसने आकर संदेश दिया कि आज महाराज जी आने वाले हैं। हम छह महीने पहले से ही एक खास मकान बना रहे थे, यह मकान अंदर की आवाज से बन रहा था कि महाराज जी ने यहाँ आना है लेकिन यह मालूम नहीं था कि वह महाराज कौन हैं, कहाँ से आएंगे?

हमने उस मकान में बच्चों की तरह कमरे बनाए कि यह कमरा महाराज जी के सोने के लिए है, यह कमरा खाना खाने के लिए है और यह कमरा बैठने के लिए है। जो प्रेमी मेरे साथ मिलकर मकान बनवा रहे थे मैंने उन्हें भी बुलवाया कि आज महाराज जी आएंगे।

उस समय मेरे पास 'दो-शब्द' का भेद था। मेरे पास संगत पहले से ही आती जाती थी, संगत को भी संदेश भेजा कि आज महाराज जी ने आना है। वह संगत मैंने इस तरह नहीं बनाई थी कि मैं उनका गुरु था या उन्हें 'नाम' देता था।

जब महाराज जी आए तो मैंने आपसे यही कहा, ''मेरा दिल-दिमाग बचपन से ही खाली है। मैं यह नहीं कह सकता कि मैं आपसे क्या सवाल करूं?'' महाराज जी ने कहा, ''मैं खाली जगह देखकर ही आया हूँ मेरे आस-पास दिमागी पहलवान बहुत हैं।''

आपने मकान को देखकर कहा कि मैं बहुत खुश हूँ क्योंकि गाँव के इलाके में इतना बड़ा मकान बनाना बहुत मुश्किल था। आप तीसरी मंजिल पर गए और ऐनक लगाकर मुझसे पूछा, ''तेरी जमीन की हद कहाँ तक है?'' मैंने आपको बताया कि जहाँ तक तार लगी हुई है, इस इलाके के मुताबिक दो मुरब्बे जमीन है। आपने कहा कि

मैं मकान को देखकर बहुत खुश हूँ लेकिन तू यहाँ से चला जा, तूने यहाँ से कुछ नहीं उठाना।

सोचकर देखें! बचपन से मेरे दिल में जो चाह थी उस चाह ने कितनी बड़ी मुश्किल खड़ी की? आप जिसे जानते न हों! वह पहली मुलाकात में ही आपको जिदंगी की रोजी-रोटी छोड़ने के लिए कहे तो कितना मुश्किल है? एक बार तो दिल हिला। आखिर यह हुआ कि जब तुझे भगवान मिल गया है, भगवान ही कहता है तो इसे अपने आप ही फिक्र होगा। मैं आपके कहने के मुताबिक ही 16 पी.एस. गया।

एक दिन गंगानगर में काफी संगत बैठी हुई थी। आप बैठे-बैठे मौज में आकर कहने लगे कि तुझमें से महक आएगी अगर कोई यह कहे कि आपमें से महक आएगी तो हम हँसने लगेंगे कि कभी बन्दों में से भी महक आई है? महाराज जी ने कहा, ''जो हुक्म था मैंने वह कह दिया है यह महक समुद्र पार कर जाएगी, अमेरिकन लोग हवाई जहाजों पर सैर करवाएंगे।'' एक प्रेमी ने कहा कि इन्हें कोई जीप पर तो बिठाता नहीं। महाराज जी ने कहा, ''जो सावन दरबार का हुक्म था मैंने वह कह दिया है।'' वक्त आने पर वह सब कुछ ही हुआ।

मैं हीरालाल या किसी और को नहीं जानता था। मैं जिस भी मुल्क में गया मैंने हर जगह पूछा कि क्या कोई आदमी मुझे जानता था? यह सब जान-पहचान परमात्मा कृपाल की थी जिसका यह वाक था। मैं जब अमेरिका जा रहा था तो हवाई जहाज में बताया गया कि हम 44 हजार फुट ऊपर उड़ रहे हैं। उस समय मेरे दिल में ख्याल आया कि मैं तो जमीन के अंदर बैठा था यह क्या हुआ?

रसल प्रकिन्स हीरालाल के लड़के कुलवन्त को कनाडा से लेकर मेरे पास राजस्थान आए। रसल प्रकिन्स परमात्मा कृपाल के 'सतसंदेश' का एडीटर है, वह आज यहाँ सतसंग में भी है। उस समय मैंने कह रखा था कि कोई भी मुझसे मिलने न आए। मैं शाम को 8

से 9 बजे तक ही सिर्फ एक घंटे के लिए बाहर निकलता था और बाहर से ताला लगवाया हुआ था। ये दोनों परवाह न करते हुए पदमपुर में महाराज जी के ग्रुप लीडर के पास गए। ग्रुप लीडर ने कहा कि हमें तो उनके पास जाने का हुक्म नहीं है। खैर उसने अपने लड़के को इनके साथ भेज दिया, ये मेरे पास आए।

उस समय इनमें कितनी घबराहट थी जिसे मैं जानता हूँ या ये जानते हैं कि इतनी दूर से आए है मैं इनसे बात करूंगा या नहीं? मेरे सेवादार ने आकर बताया कि अंग्रेज आए हैं। उस समय हमारे राजस्थान के इलाके में किसी ने अंग्रेज नहीं देखे थे। सेवादार घबराया हुआ था। मैंने उससे कहा तू क्यों घबराया हुआ है मैं इनसे मिल लेता हूँ। इन्होंने मुलाकात में मुझे 'सतसंदेश' दिया। मैं इंग्लिश जुबान नहीं जानता था कि मैं इनसे परिचय कर लेता। कुलवन्त के साथ इसकी पत्नी थी। मैंने कुलवन्त से पूछा कि यह कौन है? इसने घबराहट में अपनी पत्नी को ही रसल की पत्नी बता दिया। उस समय इनमें इतनी घबराहट थी कि जैसे मैं इन्हें यहाँ से निकाल दूँगा।

मैं रसल प्रकिन्स के साथ नरमी से पेश नहीं आया, मैंने काफी सख्त लफ्ज कहे। ये लोग थोड़ा समय मेरे पास रहकर वापिस आ गए। इन्होंने अपने मुल्क में जाकर प्रेमियों को संदेश दिया। अमेरिका से बहुत से प्रेमी छोटे-छोटे बच्चों को लेकर मेरे पास आने लगे। एक अमेरिकन सतसंगी ने मुझसे कहा, ''हम अमेरिकन लोग पैसे की बहुत कद्र करते हैं अगर एक पैसा भी बचा लें तो वह कमाया हुआ समझते हैं। आपके पास अमेरिका से इतनी पब्लिक आती है हमारा कितना पैसा खर्च होता है अगर आप ही अमेरिका आ जाएं तो कितना पैसा बचेगा?'' मैंने उन लोगों की भावना की कद्र करके हाँ कह दी।

मैं अमेरिका जाने के लिए दिल्ली आया। उस समय हीरालाल और उनकी पत्नी सब तरफ से निराश होकर बंगला साहब गुरुद्वारे

जाया करते थे। मैं उनके घर में कुछ दिन इंतजार करने लगा क्योंकि मुझे पासपोर्ट बनवाना था वीजा लेना था। मैंने उन्हें कभी यह नहीं कहा कि तुम बंगला साहब क्यों जाते हो? एक दिन हीरालाल के गुरुदेव परमात्मा कृपाल ने उसका कान पकड़कर कहा कि तू मुझे कहाँ ढूंढ रहा है? उसने मुझे आकर बताया तो मैंने कहा कि वह जो कुछ कहते हैं उसे ही मान अगर मैं उसे कहता तो पता नहीं उसका असर कैसा होता?

आप लोगों ने जिस समय हीरालाल को देखा है वह कोई और समय था जब किसी साधु से मिलें तो कोई और वक्त हो जाता है। हीरालाल को लगन लगी उसने अच्छा अभ्यास किया। जब उसका आखिरी समय आया तो उसने सबको बिठाकर अंदर का हाल बताया और अपने लड़के पप्पू से पूछा, ''बाबा जी कपड़े के जूते कब से पहनने लगे हैं?'' पप्पू ने कहा कि बाबा जी जब बैंगलोर गए थे तब से कपड़े के जूते पहनने लगे हैं।

यह कहानी बताने का मेरा भाव यही है कि हीरालाल अहमदाबाद की बहुत बातें बताया करता था। उसकी बहुत इच्छा थी कि मैं अहमदाबाद जाऊं। एक बार हीरालाल और कुलवन्त भी आप लोगों को बताने के लिए यहाँ आए थे लेकिन तब वक्त नहीं आया था।

यहाँ से करतार चन्द कई खट्टे-मीठे समय देखकर मेरे पास आया। मैं एक जमींदार हूँ वहाँ कोई खास महल भी नहीं जो शहरी आदमी को पसन्द आने बहुत मुश्किल हो जाते हैं। अब भी जब मुझसे मकान के बारे में बातचीत हुई तो मैंने बताया कि आप जब भी आएंगे तो आपको वैसा ही मिलेगा।

हीरालाल मुझे बताया करता था कि अहमदाबाद की संगत में बहुत प्यार, नम्रता है यहाँ के लोग बड़े भावनात्मक हैं। करतार चन्द जी का मिस्टर ऑबराय के साथ पत्र व्यवहार होता रहा वह मुझे सारा

हाल सुनाते रहे हैं। इनके पत्रों में बहुत प्यार से निमंत्रण होते थे कई बार अहमदाबाद का प्रोग्राम बना लेकिन वक्त नहीं आया था जब वक्त आया तो मैं आपकी सेवा में हाजिर हो गया।

बुल्लेशाह के गुरु इनायत शाह थे। बुल्लेशाह की शादी होने वाली थी उसने इनायत शाह से विनती की, ''महाराज जी! आप शादी में हाजिर हों।'' इनायत शाह को कोई खास काम था वह शादी में नहीं गए उन्होंने अपना लड़का भेज दिया अगर वे लोग उनके लड़के को इनायत शाह का रूप समझते तो उसका आदर-सत्कार करते। उन्होंने उस लड़के को एक अराई समझा और उसकी तरफ कोई खास ख्याल नहीं किया। लड़के ने वापिस आकर सारी बात इनायत शाह को बताई। इनायत शाह बहुत खफा हुए तो बुल्लेशाह के ऊपर से 'नाम' का रंग उतर गया।

बुल्लेशाह ने अपने आपको बख्शवाने के लिए नाचने वालों का रूप धारण करके नाचना शुरू किया। इनायत शाह ने पहचान लिया और पूछा, ''क्या बुल्ला है?'' उसने कहा, ''हाँ जी बुल्ला हूँ पर भूला हुआ हूँ।'' मैं जब शुरू में संसार के टूर पर गया तो मैंने यही संदेश दिया कि मैं तो एक मामूली आदमी हूँ। आपका प्यार था आपने बुलाया इसलिए भेजने वाले ने मुझे आपके पास भेज दिया।

मैं आप लोगों से मिलकर बहुत खुश हुआ हूँ। मैं आपको जोड़ने के लिए आया हूँ। हुजूर सच्चे पातशाह का करण-कारण 'शब्द-रूप' आज भी हम सबकी मदद कर रहा है। जहाँ-जहाँ सतसंग चलते हैं सब अपने-अपने भरोसे के साथ सतसंग करें, भजन-सिमरन करें।

यह मेरे बस का खेल नहीं क्योंकि मैंने अपनी जिंदगी का ज्यादा समय जमीन के नीचे बिताया है। हर जगह का वातावरण मुझे माफिक नहीं आता अगर उसने मौका दिया तो जरूर संगत के चरणों में हाजिर होंगे। आप लोग उसकी याद बनाएं, उस पर भरोसा रखकर

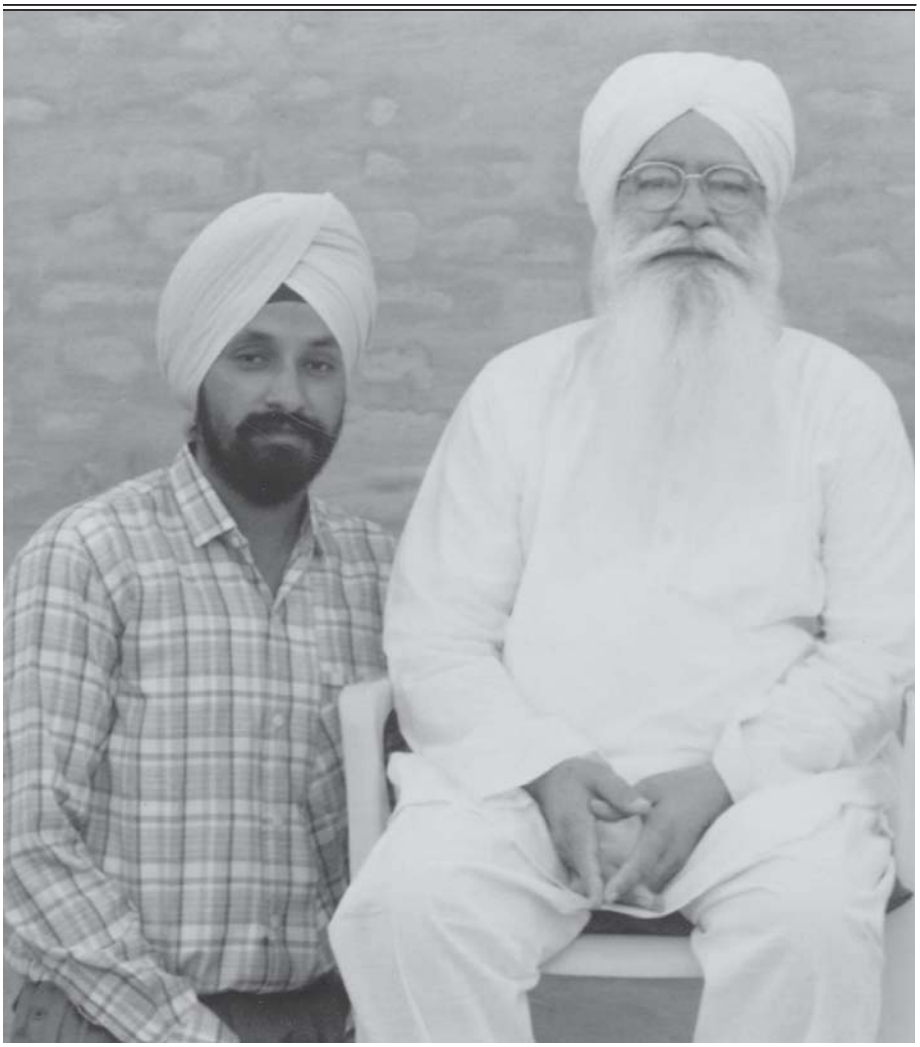

एक-दूसरे की इज्जत करें। मैंने आपको सतसंग में बताया था कि गुरु-शिष्य वही है जो एक-दूसरे की इज्जत करता है। सन्तमत प्यार का मत है भक्ति का मत है। यह निन्दा करने या पार्टी बनाने का मत नहीं। हम सबने श्रद्धा-प्यार से अपना भजन-सिमरन और सतसंग करना है। मैं यहाँ आप सबको जोड़ने के लिए आया हूँ। मेरे दिल में सबके लिए इज्जत प्यार है।

♣♣♣

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मन

स्वामी जी महाराज की बानी

बैंगलोर

मन जदों हठीला होवे, तां बदियां वल्लो मोड़ लयो,
जे अजे बाज न आवे, तां गुरु चरना विच जोड़ दयो, (2)

आया बंदे तरन दा वेला, लगया ऐ तू करन कुवेला, (2)
दिन राती करके बंदगी नू दुनिया दे बंधन तोड़ लयो,
जे अजे बाज न आवे.....

नाम गुरु दा हरदम रट लै, जूनां विचों हुण तूं बच लै, (2)
जे लेखे विच लोनी जिंदगी, नाम दी पूंजी जोड़ लयो,
जे अजे बाज न आवे.....

लगया अंदर तेरे ताला, खोल के हो जा मालो माला, (2)
सतगुरु कोलो लै के कुंजी, बज्जर दा ताला खोल लयो,
जे अजे बाज न आवे.....

दर्श पिया कृपाल दा पा लै, 'अजायब' जिंद लेखे ला लै, (2)
जे मालिक नूं मिलना है तां, सुरत शब्द नाल जोड़ लयो,
जे अजे बाज न आवे.....

सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे हमेशा ही मालिक के हुक्म में आते हैं। जिन्हें 'नाम' देने का हुक्म होता है उन्हें नाम देते हैं। वे इस दुनिया में रहते हुए अंदर मालिक के साथ जुड़े होते हैं इसके बाद भी परमात्मा के साथ जुड़ जाते है। उनकी इस संसार में आने की कोई दिलचस्पी नहीं होती लेकिन वे प्रभु प्यारे का हुक्म नहीं मोड़ सकते।

गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज अपनी पिछली कथा में लिखते हैं कि मैं पिछले जन्मों में कठिन तपस्या करके दो से एक रूप हो गया।

मैं उस परमात्मा में इस तरह मिल गया जिस तरह पतासे के अंदर चीनी मिल जाती है, ज्योति जोत में समा जाती है। मेरा दिल खुश था। परमात्मा ने मुझे हुक्म दिया कि तुम संसार में जाकर जीवों को 'नाम' का होका दो, दुनिया प्यार से दूर होती जा रही है; तुम संसार में लोगों को प्यार की महानता के बारे में बताओ।

बेशक परमात्मा ने मुझे संसार में जाने का हुक्म तो दे दिया और मुझसे कहा कि मैं तुझे अपना प्यारा बच्चा समझता हूँ। तुझे जिस चीज की जरूरत होगी मैं वह पूरी करूंगा। मैं परमात्मा का हुक्म मानकर इस दुनिया में आया लेकिन मेरी सुरत परमात्मा के चरणों में ही लगी रही।

गुरु गोविन्द सिंह जी ने संसार में आकर प्यार का संदेश दिया। सारे संसार को होका देकर कहा, ''प्यारेयो! मैं आपको सच बताता हूँ जो लोग प्यार का जीवन बना लेते हैं परमात्मा उन्हीं के लिए अपना दरवाजा खोलता है। परमात्मा हमारे अंदर बैठा है, परमात्मा को कोई धोखा नहीं दे सकता।''

सन्त-महात्मा सारे विश्व को अपना घर समझते हैं। वे किसी खास मुल्क, समाज और जाति के लिए नहीं आते। उनका सारे संसार की आत्माओं के साथ अटूट प्यार होता है। महात्मा की नजर में औरत-मर्द, अमीर-गरीब सब एक समान हैं, उनकी नजर आत्मा के ऊपर होती है आत्मा परमात्मा की अंश है; बुराई हमारे **मन** में है।

हमारे और परमात्मा के बीच मन ही रूकावट है। मन नहीं चाहता कि कोई आत्मा 'सुरत-शब्द' का अभ्यास करे। **मन** का काम हमेशा ही उलझनें पैदा करना है। यह मन पति-पत्नी को लड़वा देता है, भाई-भाई को लड़वा देता है। **मन** के पीछे लगकर ही हम कौमें बनाते हैं और एक-दूसरे को दुख देते हैं। हमारा मन संसार की तरफ जाग रहा है और परमात्मा की तरफ से सोया हुआ है।

कबीर साहब कहते हैं, ''मन की बहुत चालें हैं, इसके बहुत हथियार हैं। जिन महात्माओं ने मन के साथ संघर्ष किया है वे जानते हैं कि यह मन कितना ताकतवर है।'' रामचन्द्र जी के गुरु वशिष्ठ जी कहते हैं, ''अगर कोई यह कहे कि दुनिया में कोई ऐसा शक्तिशाली पहलवान पैदा हुआ है जिसने हिमालय पर्वत को अपने हाथ पर उठा लिया है बेशक यह मानने वाली बात नहीं फिर भी मान लेते हैं! अगर कोई यह कहे कि इतना शक्तिशाली इंसान पैदा हुआ है जिसने सारे समुद्र को एक घूँट में पी लिया है बेशक मानने वाली बात नहीं फिर भी मान लेते हैं! अगर कोई यह कहे कि मैंने अपने **मन** को वश में कर लिया है तो हम यह बात मानने के लिए तैयार नहीं लेकिन ऐसा भी नहीं कि आज तक किसी ने मन को वश में किया ही नहीं।''

सन्त-महात्माओं ने अपने **मन** को वश में किया। उन्हें मन की कमजोरी का ज्ञान है कि मन किस तरह काबू होता है? हम बुजुर्गों से सुनते हैं कि आज जहाँ खंडरात हैं कभी वहाँ बड़े-बड़े महल थे; यह भी सुनते हैं कि वहाँ खजाना पाया जाता है। खजाने के ऊपर साँप रहता है। साँप बहुत जहरीला है अगर हम खजाना प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें सबसे पहले साँप के बारे में सोचना पड़ेगा, उसकी जहर से बचने का उपाय करना पड़ेगा! तभी हम उस खजाने को प्राप्त कर सकते हैं।

साँप में यह कमजोरी है कि वह राग का आशिक होता है। सपेरे लोग बीन से राग अलापते हैं राग सुनकर साँप बीन के ऊपर भी डंक मारता है। सपेरे साँप को पकड़कर उसके दाँत खट्टे कर देते हैं उसकी जहर खत्म हो जाती है। फिर सपेरे उन्हीं साँपों को गले में डालकर शहरों में घूमते दिखाई देते हैं। सन्त-महात्माओं को **मन** की कमजोरी का ज्ञान होता है। यह मन भी लज्जत का, राग का आशिक है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

कोट जतन से यह नहीं माने, धुन सुनकर मन समझाई।

स्वामी जी महाराज इस शब्द में बयान करते हैं अगर हम इस **मन** को प्यार से अंदर का राग सुना दें! हमारा मन काबू में आ जाएगा। मैं आपको वह उपाय बताता हूँ जिससे आपका यह मन दुनिया की तरफ से सो जाएगा और परमात्मा की तरफ से जाग जाएगा।

आमतौर पर हम लोग जिंदगी में कर्मकांड करने में ही मुक्ति समझते हैं। सन्त-महात्माओं की जिंदगी तजुर्बे से गुजरी होती है। उन्होंने तजुर्बे इसलिए किए होते हैं ताकि वे हम लोगों को डेमोस्ट्रेशन दे सकें कि इन कर्मकांडो के करने से **मन** में अहंकार आ जाता है मन जागने की बजाय सो जाता है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

पाठ पढयो और वेद विचारयो निवल भुयंगम साधे।
पंच जना स्यों संग न छुटके अधक ए बुध बाधे।
प्यारे इन बिध मिलन जाईं मैं किए कर्म अनेका।
हार पड़या स्वामी के द्वारे दीजे बुद्धि विवेका।

आप कहते हैं, ''हमने बहुत से वेदों-शास्त्रों के पाठ किए। योगी लोग जो न्योली कर्म करते हैं वे कर्म भी किए। मौनी भी हुए, बर्तन छोड़कर हाथ पर माँगा और खा लिया, अगले घर चल पड़े। हमने ये सारे ही कर्म किए लेकिन **मन** के अंदर अहंकार आ गया कि मैं इतना बड़ा योगी हूँ दानी हूँ मेरे जैसा कौन है?''

आखिर थककर मैं गुरु रामदास जी के चरणों में आया उन्होंने मुझे वह विवेकबुद्धि दी जो सच और झूठ का निर्णय कर सकती थी। गुरु रामदास जी ने समझाया, ''प्यारेया! 'शब्द-नाम' की कमाई करने से ही तू कामयाब हो सकता है और सोया हुआ **मन** जाग सकता है।'' स्वामी जी महाराज का शब्द है गौर से सुनने वाला है:

सोता मन कस जागे भाई। सो उपाव मैं करूँ बखान।।
तीरथ करे बर्त भी राखे। विद्या पढ़ के हुए सुजान।।

आप कहते हैं, ''इस शब्द में मैं आपको वह उपाय बताऊँगा जिससे आपका सोता हुआ **मन** जाग जाए और परमात्मा के साथ जुड़ जाए। आमतौर पर हम लोग तीर्थों पर जाने में ही मुक्ति समझते हैं। पैसे इकट्ठे करके कोई छह महीने बाद कोई एक साल के बाद तो कोई हर महीने और कोई बारह साल बाद तीर्थों पर जाकर पानी में नहाने से ही मुक्ति समझते हैं। कोई भूखे रहकर व्रत करते हैं और वेद-शास्त्र पढ़कर अपने आपको चतुर स्याना भी समझते हैं।''

हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि उन्हें कई ऐसे भाई मिले जिन्होंने अपनी जिंदगी में सौ बार भोग डाले हुए थे। कोठोहार की तरफ तो हजार-हजार भोग डालने वाले भी कई भाई मिले। एक बार हजार भोग डालने वाले भाई से आपने कहा, ''आ भई! तेरे चरणों पर मत्था टेकते हैं। तू बहुत पढ़ा-लिखा है लेकिन यह बता कि क्या तूने कभी अंदर 'नाम' का चिंघाड़ा, कोई रोशनी देखी है?'' पाठ के अंदर आता हैः

नाम जपत कोट सूर उजियारा, बिनसे भ्रम अंधेरा।

नाम जपने वाले के अंदर रोशनी पैदा हो जाती है, उसके अंदर से अज्ञानता का अंधेरा दूर हो जाता है। उस भाई ने कहा, ''महाराज जी! हमें यह तो किसी ने बताया ही नहीं। हमें तो पढ़ने के लिए ही कहा है।'' मैं अक्सर कहा करता हूँः

पढ़या इल्म अमल न कीता, पढ़या फेर पढ़ाया की।
आदत खोटी न गँवाई, मत्था फेर घिसाया की।

जब अमल ही नहीं करना तो पढ़ने का क्या फायदा? जब अंदर वैसा ही काम, क्रोध है तो मत्था रगड़ने से क्या फायदा? महात्मा हमें प्यार से कहते हैं कि हमने पढ़कर विचार करना है कि हमारे अंदर क्या कमियाँ हैं? महात्मा बानी के अंदर उन कमियों को दूर करने के उपाय बताते हैं, हमने वे उपाय करने हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

भरिए हत्थ पैर तन देह, पानी धोत्यां उतरस खेह।
मूत पलीती कप्पड़ होय, देह सबून लईए ओह धोए।
भरिए मत पापां के संग, ओह धोवे नामें के रंग।

हर साल तीर्थों पर नहाना तो एक तरफ रह गया अगर कोई तीर्थ पर अपना मकान बनाकर रहने लग जाए रोज वहाँ का पानी पिए फिर भी 'नाम' के बिना मुक्ति नहीं होती। असल में सतगुरु ही सच्चा सरोवर है जिसमें नहाने से कौआ हँस हो जाता है। हम मनमुख लोग सतगुरु के पास कागवृति लेकर जाते हैं और हँसवृति लेकर आते हैं। काग की खुराक बिष्टा, गंद है। हँस की खुराक मोती है। हम मनमुख लोग विषय-विकारों, शराबों-कबाबों को ऊँचा समझते हैं लेकिन महात्मा की संगत में जाकर हम इन बुरी चीजों से बच जाते हैं और 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं। कबीर साहब कहते हैः

गंगा तीर्थ जे घर करे पीवे निर्मल नीर।

सच्चा तीर्थ हमारे जिस्म के अंदर है। हमारी आत्मा के ऊपर स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीन पर्दे हैं। जब हम इन तीनों पर्दों को उतारकर दसवें द्वार पारब्रह्म में पहुँचते हैं जिसे कबीर साहब और ऋषियों-मुनियों ने प्रयाग-राज कहा है। गुरु नानकदेव जी महाराज उसे सच्चा अमृतसर कहकर बयान करते हैंः

यह शरीर सरवर है सन्तों स्नान करे लिव लाए।
नाम स्नान करे से जन निर्मल शब्दे मैल गवाए।

सच्चा सरोवर हमारे जिस्म के अंदर है। आप 'शब्द-नाम' के साथ जुड़कर वहाँ पहुँचकर स्नान करें वहाँ जन्म-जन्मांतरों की मैल उतर जाती है आत्मा पवित्र हो जाती है और इस आत्मा को पता लगता है कि मेरा भी कोई परमात्मा है! मैं ऐसे ही गंद में लिपटी रही।

सन्त-महात्मा किसी भी समाज की निन्दा नहीं करते और न ही किसी कर्मकांड करने वाले को बुरा समझते हैं। सन्त-महात्माओं के

सतसंग के अंदर कोई रीति-रिवाज नहीं रखा जाता। वहाँ सिर्फ 'शब्द-नाम' का प्रेक्टिकल करवाया जाता है।

जप तप संजम बहु बिधि धारे। मौनी हुए निदान।।

बहुत से जप-तप किए आखिर मौनी भी हुए। जप उसे कहा जाता है जिस बात को हम बार-बार दोहराएं या याद करें। तप के मुत्तलिक मैं बताया करता हूँ जो मैंने खुद किया है। हमारे इलाके में मई और जून के महीने सख्त गरम होते हैं। तप मई और जून के महीने में दिन के बारह बजे शुरू किया जाता है। जो प्रेमी तप के लिए बैठता है उसके चारो तरफ गोबर की पाथियों की धूनियां लगाई जाती हैं और सिर के ऊपर पाँचवी सूरज की तपिश होती है। गाँव के लोग जानते हैं कि गोबर की पाथियों के कितने टोकरे साइडों में रखने हैं।

अपनी-अपनी श्रद्धा के मुताबिक कोई प्रेमी ओ३म शब्द का जाप करता है कोई राम नाम का जाप करता है। यह तप पाँच-छह घंटे का अभ्यास होता है। ऐसे तप पहले भी महात्मा करते आए हैं। इनके करने से सिवाय अहंकार के कुछ भी पैदा नहीं होता।

मैं जब बाबा बिशनदास के पास गया तो मैंने उनसे अपने इस तप का जिक्र किया। मेरे दिल में ख्याल था कि बाबा जी मुझे ईनाम देंगे। आपने कहा, ''देख प्यारेया! अंदर तो पहले ही काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की आग जल रही है फिर बाहर शरीर जलाने से तुझे क्या हासिल हुआ?''

यही हालत मौनियों की होती है। वे जुबान से कुछ नहीं माँगते लिखकर माँग लेते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जब माँगना ही है चाहे लिखकर माँग लें या बोलकर माँग लें बिमारी तो माँगने की ही है।'' गुरु नानक देव जी कहते हैंः

मौनी होय बैठा अधूती, हृदय कल्पन गाठा।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''हमने ये कर्म भी बहुत प्यार और भरोसे से किए हैं। मुँह को बंद करने का क्या फायदा अगर हमारा हृदय दुनिया के पदार्थों के लिए तरस रहा हो।''

अस उपाव हम बहुतक कीन्हे। तो भी यह मन जगा न आन।।

आप कहते हैं, ''हमने प्यार से और भी बहुत से उपाय किए लेकिन **मन** के अंदर अहंकार आ गया यह मन जागने की बजाय सो गया; ज्यादा मस्त हो गया कि मैं बहुत ऊँचा हूँ मेरे जैसा कौन है? मैंने तो इतने कर्म किए हैं।''

खोजत खोजत सतगुरु पाये। उन यह जुक्ति कही परमान।।

आप प्यार से कहते हैं, ''हमने अपनी खोज जारी रखी अगर हमारे अंदर सच्ची तड़प सच्ची विरह है तो परमात्मा अपने मिलने का इंतजाम खुद ही करता है। हम भूल में होते हैं जो यह कहते हैं कि हमने सतगुरु को पा लिया या हम सतगुरु के पास गए।''

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का उसूल है जरूर मिलती है।'' जिस तरह बच्चा सोया हुआ है माता घर के कारोबार में मस्त है। जब बच्चा जाग जाता है तो अपनी जरूरत के लिए रोना-चिल्लाना शुरू कर देता है। माता के अंदर ममता है, वह ममता से बंधी हुई घर का सारा कारोबार बीच में ही छोड़कर बच्चे को छाती से लगा लेती है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''प्यारेयो! भूले हुए लोग ही ऐसा कहते हैं कि हम सन्तों के पास गए। हमने डेरे में जाकर 'नामदान' प्राप्त किया। हम रोजाना भजन-अभ्यास करते हैं लेकिन जब आँखें खुल जाती हैं अंदर चले जाते हैं तब पता लगता है कि किसी ने हमें बुलाया है या कोई खुद हमारे पास आया है; गुरु 'नाम' जपवा रहा है या हम 'नाम' जप रहे हैं?''

आप प्यार से कहते हैं कि परमात्मा ने दया की सतगुरु से मिला दिया। सतगुरु ने हमें बाहर के रीति-रिवाजों से हटाकर 'सुरत-शब्द' के अभ्यास में लगा दिया। हम जिस परमात्मा को जंगलों, पहाड़ों में बैठा हुआ समझते थे फिर पता लगा कि वह परमात्मा हमारे अंदर ही बैठा है।

सतसंग करो संत को सेवो। तन मन करो कुरबान।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि आप सतसंग में जाएं। सतसंग में जाकर ही हमें हमारी कमजोरियों का, गलतियों का पता लगता है और हमारी तहकीकात मुक्कमल होती है। हमारे ऊँचे भाग्य हों तो ही हम सतसंग में जा सकते हैं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

वडभागी गुरु संगत पावे, भागहीन भ्रम चोटां खावे।
बिन भागां सतसंग न लभ्भे, बिन संगत मेल भरीजे जिओ।

सतसंग में महात्मा हमारे अंदर नाम जपने का शौक, विरह पैदा कर देते हैं। अपने तन-मन को कुर्बान कर दें। कुर्बान करने का मतलब 'शब्द-नाम' की कमाई करना है। आत्मा का असली सतसंग खंडो-ब्रह्माडो में जाकर परमात्मा के साथ मिलाप करना होता है।

सतगुरु शब्द सुनो गगना चढ़। चेत लगाओ अपना ध्यान।।
जागत जागत अब मन जागा। झूठा लगा जहान।।

सतसंग में महात्मा आपको जो कहते हैं आप उस पर अमल करें। उनके दिए हुए सिमरन को प्यार और भरोसे के साथ करें। अपने फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे एकाग्र करें, वहाँ जो 'शब्द' आ रहा है उसे सुनें। आप जैसे-जैसे उस 'शब्द' को सुनेंगे वैसे-वैसे आपका मन दुनिया की तरफ सोना शुरू कर देगा और परमात्मा की तरफ जागना शुरू कर देगा। हम जितना पहाड़ की तरफ जाते हैं उतनी गर्मी कम होती जाती है और सर्दी लगनी शुरू हो जाती है।

हमारी भी यही हालत है हम जैसे-जैसे अपने ख्याल को दुनिया की तरफ से अंदर की तरफ ले जाते हैं उतना ही हम उस 'शब्द' को पकड़ लेते हैं और हमारा **मन** जागना शुरू हो जाता है।

मन की मदद मिली सूरत को। दोनों अपने महल समान।।
बिना शब्द यह मन नहिं जागे। करो चाहे कोइ अनेक विधान।।

अब स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जो मन हमें शराबों-कबाबों और दुनिया के धंधों में फँसाता था फिर वही **मन** हमारी मदद करने लग जाता है आत्मा और मन दोनों ही अपने महल के अंदर जाकर समा जाते हैं। मन ब्रह्म की अंश है त्रिकुटी का रहने वाला है, वहाँ पहुँच जाता है। आत्मा सतलोक की वासी है सतलोक में पहुँच जाती है। 'शब्द-नाम' की कमाई के बगैर आपका **मन** कभी भी टिकाने पर नहीं पहुँचेगा। चाहे आप कितने भी उपाय कर लें कोई भी उपाय कारगर नहीं होता।''

यही उपाव छाँट कर गाया। और उपाय न कर परमान।
बिरथा बैस बितावें अपनी। लगे न कभी ठिकान।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''सुरत-शब्द के बिना आप मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते। 'सुरत-शब्द' का भाव आत्मा का परमात्मा से मिलाप है। सुरत भी हमारे अंदर है और शब्द भी हमारे अंदर है लेकिन हम खुद उसे जोड़ नहीं सकते। जब तक सुरत-शब्द को जोड़ने वाला कोई महात्मा नहीं मिलता तब तक आप अपनी उम्र को व्यर्थ ही गँवा रहे हैं।''

जब गुरु नानकदेव जी महाराज की सिद्धों के साथ गोष्ठी हुई तो सिद्धों ने पूछा हे महापुरुष! संसार समुद्र से तरने का क्या साधन है? आप किस तरह तरे हैं और हम किस तरह तर सकते हैं? सिद्ध यही सोचते थे कि यह गृहस्थ में रहता है। इसने दुनिया वाले कपड़े

पहने हुए हैं जबकि हमने घर-बार छोड़ा हुआ है। हम नेती, धोती, न्योली कर्म कर रहे हैं इसने कुछ भी नहीं किया। गुरु नानक साहब उन्हें प्यार से कहते हैं:

जैसे जल में कमल निरालम मुरगावी नी छाने।
सुरत शब्द भवसागर तरिए नानक नाम वखाने।

जिस तरह मुरगावी जल के अंदर खाती-पीती है लेकिन जब उड़ती है तो खुष्क परों से उड़ जाती है। कमल पानी के अंदर ही होता है पानी बढ़ जाता है तो उसकी डंडी भी बढ़ जाती है। इसी तरह 'सुरत-शब्द' का अभ्यासी संसार में रहते हुए जीवन मुक्त है।

संत बिना सब भटके डोलें। बिना संत नहि शब्द पिछान।।
शब्द शब्द मैं शब्दहि गाऊँ। तू भी सुरत लगा दे तान।।

आप कहते हैं, ''जब तक हमें शब्द-अभ्यासी महात्मा नहीं मिलता तब तक हमारे मन की भटकना नहीं मिट सकती। महात्मा आकर हमें 'शब्द-नाम' का होका देते हैं। डॉक्टर से दवाई लाकर अलमारी में न रखें उस दवाई को प्रेम प्यार से खाएं और डॉक्टर जो परहेज बताता है वह भी करें। इसी तरह हमारा फर्ज बनता है कि महात्मा के दिए हुए 'शब्द-नाम' की कमाई ईमानदारी से करें।''

कोई भी महात्मा पहले की बनी हुई कौम तोड़ने के लिए नहीं आते और न ही कोई नई कौम बनाने के लिए आते हैं। महात्मा किसी सभा-सोसाईटी के ऊपर बोझ नहीं बनते। वह अपना खर्च खेती, दुकानदारी या मजदूरी करके ही चलाते हैं। वह संगत पर मुफ्त का ही परोपकार करते हैं।

हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो महात्मा आपसे एक पैसे की भी आशा न रखता हो आपको इससे ज्यादा सस्ता नौकर और कौन मिलेगा?''

महात्मा हमें 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ने के लिए आते हैं। वे हमें प्यार से कहते हैं कि हम सबका परमात्मा एक है हम सब उसके बच्चे हैं। हम मन के पीछे लगकर एक-दूसरे से नफरत करते हैं।

घर पावे चौरासी छूटे। जन्म मरन की होवे हान।।
राधास्वामी कहें बुझाई। बिना संत सब भटके खान।।

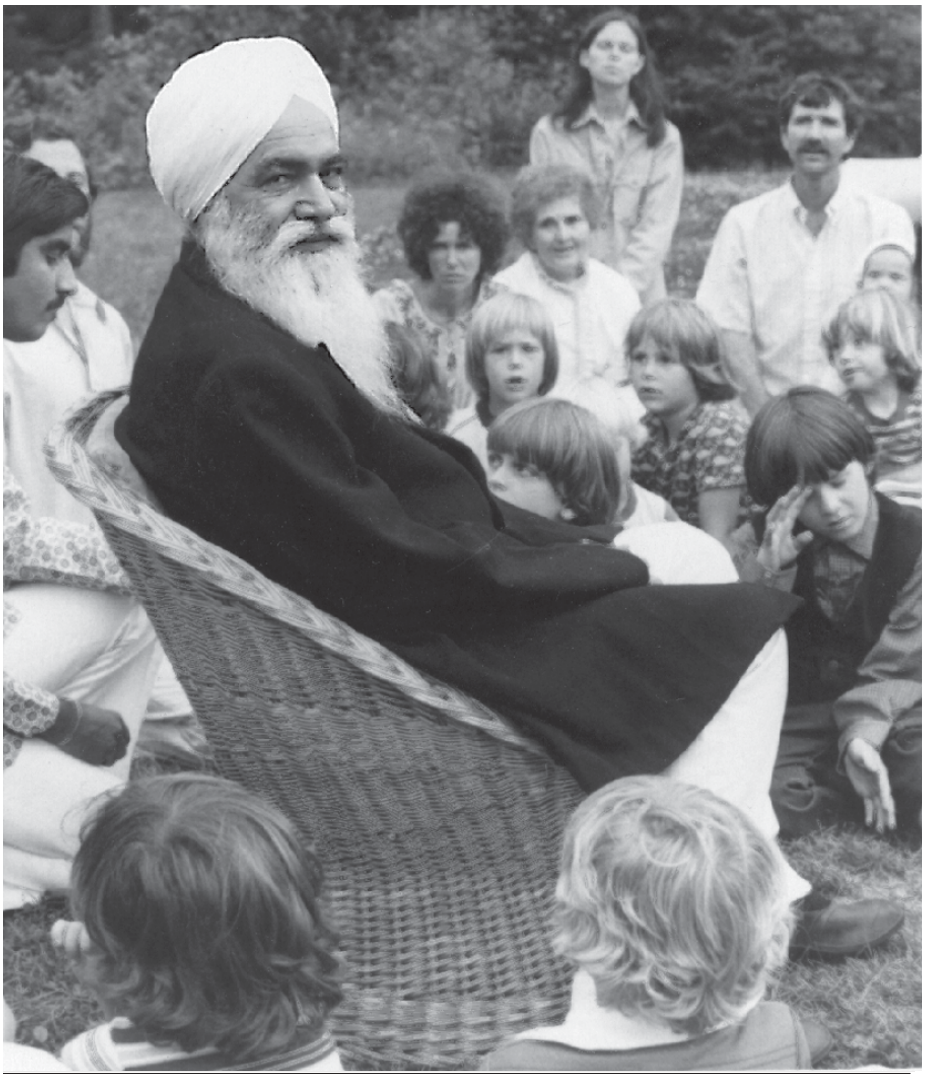

परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखारविन्द से अनमोल संदेश

प्रेम-विरह

16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

पिछले अंक से जारी.....

प्रीतम का मेल बहुत दुर्लभ और मुश्किल है, यह तो सिर का सौदा है। गुरु साहब जी फरमाते हैं अगर तुझे प्रेम खेलने का चाव है तो सिर को तली पर रखकर मेरी गली में आ। इस रास्ते पर पैर रखकर सिर का कोई दावा नहीं रखना।

जो तू प्रेम खेलण का चाव, सिर धर गली मेरी आवो।
नित मार्ग पैर धरीजे, सिर दीजे कांण न कीजे।

प्रेम का मार्ग कठिन है। प्रेम कहने में तो आसान लगता है लेकिन प्रेम का मार्ग राजयोग, कर्मयोग या वेदांत मार्ग जैसा कठिन है। हर मार्ग में खुदी को पूरी तरह नाश करना जरूरी है। दुनिया में किसी को खुश करना कितना कठिन है। इंसान कोशिशें करता हुआ मर जाता है फिर भी कोई न कोई कसर रह ही जाती है तो मालिक को खुश करना कितना कठिन है? कबीर साहब कहते हैं:

प्रेम गली अति सांकरी तामे दो न समाहे।

प्रेम का मार्ग खंडे की धार की तरह है। यह बहुत तंग भी है इसमें केवल एक ही चल सकता है। प्रेम में भगवान और भक्त को भी एक होकर जाना पड़ता है, थोड़ी सी गफलत से गिरने का खतरा है। इस मार्ग पर चलना बहुत हौंसले वाले का काम है। जो मालिक और गुरु का आसरा लेकर चलते हैं वे हर कदम पर अपने आपको प्रीतम की झोली में समझते हैं। उनकी कदम-कदम पर संभाल होती है फिर उन्हें गिरने का डर नहीं रहता।

प्रेम करना लोभी, लालची और जमीरफरोशों का काम नहीं। प्रेम एक पाक जज्बा है, यह हर किसी के हिस्से नहीं आता। दुनिया

की मक्खियां विषय-विकारों पर भिन्न-भिन्न करती रहती हैं। शर्मद साहब फरमाते हैं कि दुनिया की लालच के शिकार हुए जीवों को मालिक प्रेम का गम नहीं देता। भँवरे के दिल में लाट को देखकर जो जलन होती है उसे मक्खी क्या जान सकती है? प्रीतम से मिलने के लिए मुद्दतें चाहिए। ईश्क की दौलत हर किसी को नहीं दी जाती।

जामी साहब भी यही फरमाते हैं कि प्रीतम के प्रेम का दर्द आम दुनिया को नहीं मिलता। यह दौलत केवल उनके लिए है जो प्रेम के लिए ही जी रहे हैं। यह प्रेम गुरु की भक्ति के बिना प्राप्त नहीं हो सकता। दुनियादार इसे क्या समझेंगे? इसमें वे लोग हिस्सा ले सकते हैं जो एक रंग वाले हैं, जिनका दिल-दिमाग एक है जो वफा तथा भरोसे वाले हैं। अपने आपको बेचने वाला अर्थात अपने आपको धोखा देने वाला प्रेम के नशे को नहीं पी सकता।

रत्ते सेई जे मुख न मुड़ेन जिनी स्याता साईं।
झड़ झड़ पवन्दे कच्चे विरही जिन्ना कार न आई।

प्रेम के रास्ते पर जाना मजबूत इरादे वाले विरहियों का ही काम है जो किसी हालत में भी मुँह न मोड़े वे प्रीतम को पा लेते हैं। कच्ची विरह वाले रास्ते में झड़-झड़ जाते हैं। प्रेम दलीलों हुज्जतों का मार्ग नहीं इसलिए मजनूं बनकर जाना पड़ता है।

हाफिज साहब फरमाते हैं, ''जब तक तेरी बुद्धि इल्मों और हुनरों में फैली रहेगी तब तक तू हकीकत को नहीं जान सकेगा। तू अपने आपको न देख! हौमें को छोड़ दे। तू मदरसों में प्रेम का मोती न ढूंढ अगर तुझे उसे पाने की चाह है तो दिल को लैला की जुल्फ के अंदर बंद कर दे और मजनूं की तरह काम कर अर्थात अपने प्रीतम के ध्यान मे मस्त हो जा क्योंकि अक्ल की दलील प्रेम के नुकसान का कारण बनती है। लैला के रास्ते पर जान को अनेकों खतरे हैं। इस रास्ते पर चलने की पहली शर्त यह है कि तू मजनूं बनकर जा।''

प्रेम का असर

प्रेम अपने आप ही अपना अंत है, यह रब्बी हस्ती का एक पाक जज्बा है। जो किसी पाक इंसान के दिल में बसकर उसके इर्द-गिर्द पवित्रता की किरणें फैलाता है। प्रेम करने वाले दिल तो पाक होते ही हैं लेकिन जो लोग उन पाक नजारों को देखते हैं वे उनकी पवित्रता के असर से खाली नहीं रहते। देखने वाले के दिल पर इस कद्र असर पड़ता है कि वह उस पाक असर को अपने दिल-दिमाग और जिस्म में महसूस करता है।

मौहब्बत जमीनी नहीं आसमानी है। जब दो दिलों को एक-दूसरे पर अपने जातिय प्रेम करके कुर्बान होते हुए देखें तो समझ लें कि वे आसमानी बरकतों की बारिश बनकर दुनिया में आए हैं ताकि कुम्हलाए हुए दिल हरे हो जाएं! मौहब्बत छिपाने पर छिप नहीं सकती। यह वह चीज है जो कभी पर्दे के अंदर नहीं रह सकती अगर जुबान चुप भी रहे तो आँखें ही बेख्तियार रो पड़ती हैं। कबीर साहब कहते हैं:

प्रेम छुपाया न छुपे जां घट प्रकट होय।
जो पे मुख बोले नहीं नैण देत है रोय।

बारिश की रहमत तो आसमान से आती है अगर यहाँ दो प्यार करने वालों की आँखें मिलती है तो उनकी अंदर की आँख से मौहब्बत के आँसू फूट आते हैं। स्वाति बूँद के मोती बनने में तो देर लगती है लेकिन आँखों के आँसुओं का पानी चमकते हुए मोतियों की लड़ी की शक्ल में झट निकल आता है। दिल का सारा रूखापन दूर हो जाता है। सिर से लेकर पैरों तक तरावट आ जाती है। जिस तरह दूध और पानी मिलकर एक हो जाते हैं इसी तरह मौहब्बत का पानी दो दिलों को एक कर देता है फिर उनका अलग होना मुश्किल हो जाता है।

मौहब्बत में सच्चाई है इसमें दिखावा और पाखंड नहीं, इसमें कोई बनावट नहीं होती। इसके असर से दो दिल इस तरह जुड़ जाते

हैं फिर कोई फर्क दिखाई नहीं देता कि इनमें कौन सा तालीब है और कौन सा मतलूब? कौन प्रेमी है और कौन प्रीतम है? प्रेमी और प्रीतम दोनों मिलकर एक हो जाते हैं।

मैं तन हूँ गर तू जान है, मैं जान हूँ तू तन मेरा।
तू मुझमें दिल से है फिदा, मैं हूँ फिदा दिल से तेरा।
दो जिस्म में एक जान है, दोनों का एक अरमान है।
यह ईश्क का सामान है, क्या समझो कोई तीसरा।

प्रेम वह तलवार है जिसके चलने पर दो से एक रूप हो जाते हैं। प्रेमी प्रीतम में इतना लीन और मग्न हो जाता है कि उसका ही रूप बन जाता है। कहते हैं कि राधा भगवान कृष्ण में इतनी मग्न हो गई कि कृष्ण का ही रूप बन गई। इस बेखुदी में वह अपनी सहेलियों से पूछती है, ''तुमने कहीं राधिका देखी है?'' इसी एकता का जिक्र साईं बुल्लेशाह हीर की जुबानी करते हैंः

रांझा रांझा करदी नी मैं आपे रांझा होई।
सद्दो न मैनूं धीदो रांझा हीर न आखे कोई।

दादू साहब फरमाते हैं, ''असल में ईश्क वही है जिसमें आशिक अपने माशूक के ध्यान में उसी का रूप बन जाए। ऐसे प्रेमियों पर मालिक भी आशिक हो जाता है।''

आशिक माशूक हो गया, ईश्क कहावे सोय।
दादू उस माशूक का अल्लाह आशिक होय।

जब दिल में प्रेम इस तरह की सूरत अख्तियार करे तब किसी तरह के जप-तप, इबादत या मेहनत की जरूरत नहीं रहती क्योंकि प्रेम ही सच्ची ईबादत है। सच्ची ईबादत केवल मौहब्बत में है। सच्ची एकाग्रता केवल मौहब्बत से ही आती है। सालों अभ्यास करने के बाद जो रसाई नसीब नहीं होती इसमें वह एकदम केवल नजर के आर-पार हो जाने से मिल जाती है, यही सच्चा विसाल और योग है।

मौलाना रूम साहब फरमाते हैं कि मौहब्बत करने से मामूली आदमी की कीमत बढ़ जाती है, मौहब्बत का आलौकिक असर होता है। मौहब्बत करने से कड़वे मीठे बन जाते हैं। ताँबा सोना हो जाता है। मौहब्बत का दर्द पैदा होने पर वही ईलाज बन जाता है। दुख देने वाले लोग फूलों की तरह खुशी और खुशबू देने वाले बन जाते हैं।

मौहब्बत से पत्थर दिल इंसान तेल की तरह हो जाते हैं। लोहे की तरह कठोर लोग मोम की तरह हो जाते हैं। मौहब्बत से जहर अमृत और शेर चूहा बन जाता है। मौहब्बत से बीमारी तंदरूस्ती और जुल्म रहमत बन जाता है। मौहब्बत से मुर्दे जी उठते हैं और बादशाह गुलाम बन जाते हैं।

प्रेम वह जोत है जो परमार्थ का रास्ता देखने की शक्ति पैदा कर देती है। प्रेम के बिना इंसान अंधा है। प्रेम के बिना इंसान बेजान है और बेजान जिस्म हैवानों की खुराक होती है। प्रेम चढ़ती कला में रखता है। प्रेम का काम अपना आप गँवाना है। प्रेम सदा बढ़ता ही रहता है इसमें सदा चढ़ाव ही चढ़ाव है। यह कभी गिरता नहीं। बुल्लेशाह ने ठीक ही कहा हैः

ईश्क दी नवियों नवी बहार।

प्रेम से इंसान सच्चा-सुच्चा पुरुष बन जाता है। मौहब्बत मामूली जीवों को रूहानी देवता बना देती है। प्रेम सब दुखों का पक्का ईलाज है, यह सब तकलीफों को बदल देने वाला है। इसके कारण मन की सब मैलें दूर हो जाती हैं और रूह चमक उठती है फिर यह मालिक से विसाल करने लायक हो जाती है। प्रेम का नशा मन से सब मैलों को उतारकर हमारी रूह को रूहानी और चेतन देशों में ले जाने के लिए मददगार होता है।

शेष अगले अंक में.....

धन्य अजायब

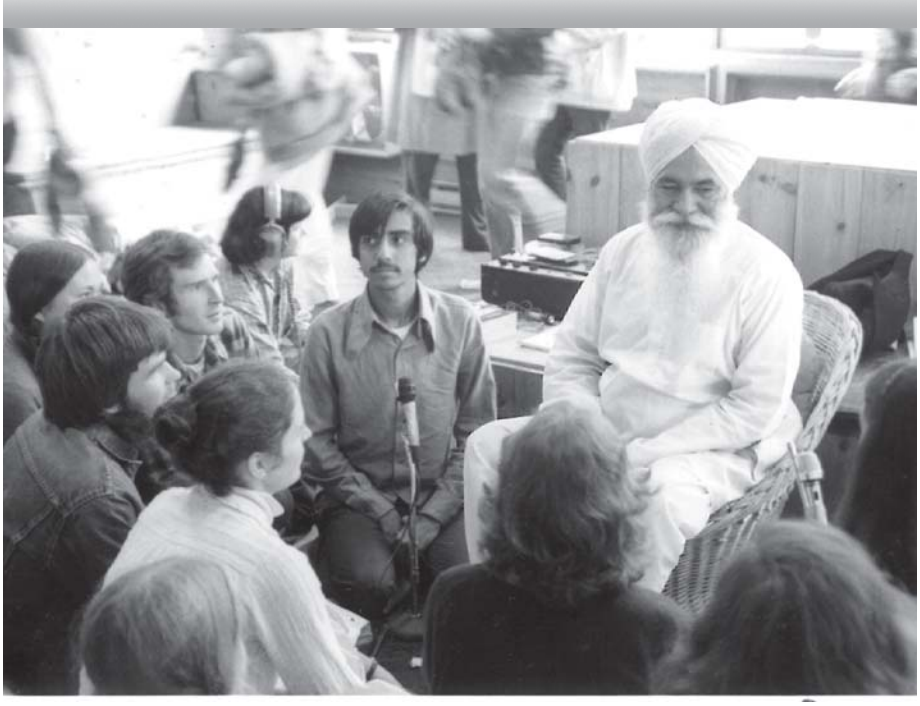

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी मुम्बई में 6 से 10 जनवरी 2010 तक नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी भाई-बहनों के चरणों में विनम्र निवेदन है कि सतसंग में पहुँचकर लाभ उठाएं।

आरोग्य भूरा भाई भवन,
शान्तिलाल मोदी मार्ग, (नजदीक मयूर सिनेमा)
कांदिवली (पश्चिम), मुम्बई - 400 067
फोन 022-325 14 195, 93246 51 321